वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 49 | शनिवार 17 जून 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

सरकार के खिलाफ पार्षदों के साथ धरने पर बैठी महापौर

मुनेश बोली- लापरवाह अधिकारी को बर्खास्त करें सरकार

जयपुर. कासं। राजस्थान में कांग्रेस सरकार की परेशानी लगातार बढ़ती नजर आ रही है। जयपुर हेरिटेज में महापौर मनीष गुर्जर कांग्रेसी पार्षदों के साथ सरकार के खिलाफ धरने पर बैठ गई है। महापौर का कहना है कि नगर निगम में अतिरिक्त आयुक्त राजेंद्र वर्मा लापरवाह और बदतमीज है। वर्मा ने पार्षदों के साथ अभद्र व्यवहार किया है। इसके साथ ही वह काम में भी पिछले लंबे समय से लापरवाही बरत रहे हैं। जिससे शहर की सफाई व्यवस्था जहां चौपट हो गई है। वहीं आम जनता को मूलभूत कामों के लिए भी परेशान होना पड़ रहा है। ऐसे में जब तक सरकार वर्मा को नहीं हटाएगी हमारा विरोध जारी रहेगा। नगर निगम के सीनियर पार्षद उमरदराज ने कहा कि शहर में पार्षदों को सफाई करवाने के लिए कर्मचारी तक नहीं दिए जा रहे हैं। आज पार्षदों को कर्मचारी देने का टेंडर होने वाला था लेकिन अतिरिक्त आयुक्त राजेंद्र वर्मा ने जानबूझकर टेंडर नहीं होने दिया जिससे मानसून के दौरान शहर की सफाई व्यवस्था पूरी तरह से बिगड़ जाएगी। जब इस मामले में पार्षदों ने उनसे बातचीत करनी चाही। तो उन्होंने पार्षदों को ही धमकी दी पार्षदों ने जब इसकी शिकायत महापौर से की। तो उन्होंने महापौर से भी असभ्य भाषा का इस्तेमाल किया। जिसे नगर निगम के पार्षद किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं करेंगे।

पवन ऊर्जा के क्षेत्र में केन्द्र सरकार द्वारा राजस्थान प्रथम पुरस्कार से सम्मानित

राजस्थान पवन ऊर्जा के क्षेत्र में अव्वल

जयपुर.कासं। केन्द्र सरकार के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा राजस्थान को पवन ऊर्जा के क्षेत्र में अन्य राज्यों की अपेक्षा सर्वोत्कृष्ट कार्य किये जाने हेतु प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। 'ग्लोबल विण्ड डे' (15 जून) के अवसर पर गुरूवार को नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के तत्वाधान में नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में यह पुरस्कार प्रदान किया गया। राज्य सरकार की ओर से प्रमुख शासन सचिव, ऊर्जा भास्कर ए.सावन्त ने केन्द्रीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के सचिव बी.एस.भल्ला से यह सम्मान प्राप्त किया। राज्य के ऊर्जा मंत्री भंवर सिंह भाटी ने बधाई देते हुए कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में राजस्थान सरकार द्वारा जारी निवेशोन्मुखी अक्षय ऊर्जा नीतियों के कारण राजस्थान प्रदेश सौर ऊर्जा में तो अव्वल है ही, साथ ही वर्ष 2022-23 में देश में सर्वाधिक पवन ऊर्जा परियोजनाएं स्थापित कर पवन ऊर्जा के क्षेत्र में भी देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस अवसर पर प्रमुख शासन सचिव भास्कर ए.सावन्त ने अवगत कराया कि वर्ष 2022-23 में प्रदेश में 867 मेगावाट क्षमता की नई पवन ऊर्जा परियोजनाऐं स्थापित की गई जो कि अन्य राज्यों की अपेक्षा सर्वाधिक है। वर्ष 2022 में प्रदेश में 4337 मेगावाट पवन ऊर्जा क्षमता स्थापित की गयी थी जो कि मार्च 2023 तक बढ़कर 5204 मेगावाट हो गई।

वीर सपूतों को उनकी तीसरी बरसी पर श्रद्धांजलि अर्पित की: पूर्व सैनिकों का सरकार के खिलाफ प्रदर्शन, 2100 फीट लंबे तिरंगे के साथ निकाली रैली

जयपुर. शाबाश इंडिया

अपनी मांगों को लेकर प्रदेश से पूर्व सैनिक 4 जून से शहीद स्मारक पर धरने पर बैठे हैं। इसी क्रम में गुरुवार को शहीद स्मारक प्रदेशभर से पूर्व सैनिक एकत्र हुए। सर्वप्रथम गलवान घाटी में शहीद हुए देश के वीर सपूतों को उनकी तीसरी बरसी पर श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद राज्य सरकार के खिलाफ 2100 फीट लंबे तिरंगे की रैली निकाली। रैली शहीद स्मारक से गवर्नमेंट हॉस्टल, चौमं हाउस सर्किल, भाजपा कार्यालय के सामने से राजमहल चौराहा से 22 गोदाम से होते हुए वापस इसी

रास्ते से शहीद स्मारक पहुंचकर संपन्न हुई। शाम को सीएमओ के बुलावे पर पूर्व सैनिकों के प्रतिनिधि मंडल ने मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। पूर्व सैनिक श्रवण सिंह गोगामेड़ी व हिम्मत सिंह कमांडो ने बताया कि सरकार के हर मंच पर हमने अपनी मांगे रखीं। पिछले साल 7 दिसंबर को राज्यपाल के आदेश पर कार्मिक विभाग ने एक परिपत्र जारी किया जिसमें सैनिकों को आरक्षण को जातिगत पर वर्गीकरण कर दिया गया। हमारी मांग है कि उसे वापस संशोधित करके सैनिकों की अलग से श्रेणी बनाकर कुल पदों में से आरक्षण दिया जाए। साथ ही एक मेरिट की भी मांग रखी। हमारी सात सूत्री मांग मानी जाए रैली में सुरेश शर्मा, दिलिप शर्मा, पृथ्वी सिंह, महावीर सिंह, सत्यनारायण सहित प्रदेश के सभी जिलों से पूर्व सैनिक शामिल हुए।

श्रीमद् भागवत में समाया समस्त वेद, पुराणों का सार, जो श्रवण कर ले उसके जीवन का कल्याण- श्रीजी महाराज

भगवान की सारी कथाओं का सार रामचरित मानस, इसे जलाने की बात करने वाले मूर्ख

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। भगवान वेदव्यास ने हम सब जीवों पर कल्याण करते हुए समस्त वेदों, शास्त्रों व पुराणों का सार 7 दिन की कथा में डाल दिया जिसे श्रीमद् भागवत कथा कहते है। श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण करने वाले के जीवन का कल्याण होने के साथ उसकी सारी विपदाएं दूर हो जाती है। जिनका स्मरण मात्र जीव को समस्त आपदाओं से मुक्त कर देता वह भगवान की दिव्य कथाएं है। ये विचार ठाकुर श्री दूधाधारी गोपालजी महाराज का नूतन महल प्रवेश महोत्सव के तहत नूतन महल प्रवेश महोत्सव समिति के तत्वावधान में अग्रवाल उत्सव भवन में आयोजित सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ के तीसरे दिन शुक्रवार को व्यास पीठ से श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्री श्यामशरण देवाचार्यश्री ह्यश्रीजीह्व महाराज ने व्यक्त किए। उन्होंने रामचरित मानस का जिक्र करते हुए भगवान की सारी कथाओं का सार रामचरित मानस है। इसकी महिमा भी उतनी ही है जिनती समस्त शास्त्रों और पुराणों की है। रामचरित मानस को जलाने की बात करने वाले मूर्ख है। मानस तो साक्षात वेद है कोई उसे कैसे जला सकता है। कोई एक बार उसका अध्ययन कर ले तो फिर उससे विमुख नहीं हो सकता। संस्कृत में सब नहीं समझ पाए तो तुलसीदासजी ने रामचरित मानस को आमजन के लिए ओर सरल बना दिया। उन्होंने कहा कि मन में कुछ अच्छा करने का भाव आए तो इन्तजार मत करो उसे कर डालो पता नहीं फिर अवसर मिले या न मिले। हरिनाम के बिना जीव का कोई सहारा नहीं हो सकता। सच्चे मन से सात दिन भागवत कथा श्रवण आपको जन्म-जन्मान्तर से मुक्ति दिला सकता है। कथा के तहत भगवान के वराहअवतार, हिरण्याक्ष वध, श्री कपिल का अवतार, कपिल अष्टाध्यायी का उपदेश आदि प्रसंगों का वाचन किया गया। कथा के दौरान श्रीहरिशेवाधाम के महामंडलेश्वर हंसारामजी महाराज ने मंच पर पहुंच श्रीजी महाराज को माल्यार्पण किया तो श्रीजी महाराज ने भी उनका अभिवादन किया। श्रीजी महाराज ने हंसारामजी महाराज को सनातन संस्कृति की विभूति बताते हुए कहा कि हमारी तो परम्परा ही हंस परम्परा होने से यह हमारे लिए विशेष है। उन्होंने कहा कि सत्संग में संतों का आगमन न हो ऐसा संभव ही नहीं है। तीसरे दिन श्रीजी महाराज का स्वागत करने वालों में मुख्य जजमान राजेशजी संजय बाहेती, जजमान सुरेश सारड़ा, बंशीलाल सोड़ानी, सुरेश भट्ट, दीपक भदादा, रमेश बाल्दी, अशोक अजमेरा, बद्रीनारायण लढ़ा, प्रकाश छाबड़ा, जगदीश ईनाणी, नरेश गट्टानी, सुभाष नुवाल आदि शामिल थे। कथा के अंत में व्यास पीठ की आरती करने वालों में जजमान शिवकुमार पारीक, नरेशकुमार टेलर, सुरेश गट्टानी,गोपाल दरक, प्रहलादराय डाड, प्रभात सोमानी,जगदीशचन्द्र चेचाणी, कैलाशचन्द्र कोठारी, राधेश्याम सोमानी, अशोक बाहेती, केदार गगरानी, मनीष कोगटा आदि शामिल थे। अतिथियों का स्वागत आयोजन समिति द्वारा किया गया। श्रीमद् भागवत कथा का वाचन 20 जून तक प्रतिदिन शाम 4 से 7 बजे तक होगा।

भगवत प्राप्ति के लिए भजन जरूरी

श्रीजी महाराज ने भजन की महिमा बताते हुए कहा कि जब तक ऐसा नहीं करेंगे तब तक कल्याण नहीं हो सकता। भगवत प्राप्ति के लिए भजन जरूरी है। जीवन को संकटमुक्त रखने के लिए भजन के माध्यम से निरन्तर परमात्मा का स्मरण करो। हम जो हुआ उसे बदल नहीं सकते पर परमात्मा की भक्ति से आने वाले जीवन को सहज व सुगम बना सकते है। जीवन के अंतिम लक्ष्य मुक्ति को प्राप्त करने की राह भजन है। हम भजन सुनते तो है पर करते नहीं इसलिए समस्याएं आती है। कथा के दौरान जय-जय श्री राधे, श्रीमद् भागवत की जय, श्रीरामचन्द्र भगवान की जय आदि जयकारे गूंजते रहे। उन्होंने समय का पंछी उड़ता जाए क्यो प्राणी हरि नाम न गाए, श्रीकृष्ण गोविन्द मुरली मनोहर आदि भजनों के माध्यम से भक्ति रस की ऐसी धारा प्रवाहित की जिसमें डूबकर कई श्रोता झूमते रहे।

रासलीला में छाई कृष्ण जन्म की खुशियां, मनाया नंदोत्सव

ठाकुर श्री दूधाधारी गोपालजी महाराज का नूतन महल प्रवेश महोत्सव के तहत श्रीदूधाधारी गोपाल मंदिर परिसर में रासलीला महोत्सव के दूसरे दिन गुरूवार रात भी आकर्षक प्रस्तुतियों ने भक्तों का मन मोह लिया। महोत्सव में वृन्दावन के श्रीराधा सर्वेश्वर लीला संस्थान के कलाकारों द्वारा रासलीला शुरू के आधे घंटे महारास की प्रस्तुति के बाद भगवान कृष्ण के जीवन से जुड़ी विभिन्न लीलाओं की प्रस्तुति दी गई। गोपियों द्वारा आरती कर राधा-कृष्ण को रास करने के लिए आमंत्रित किया गया।

गूंजे गिरिराज धरण के जयकारे, सजाई श्रीनाथजी की सजीव झांकी, लगाया छप्पन भोग

श्रीकृष्ण का नाम ही आनंद व उत्सव का प्रतीक-स्वामी सुदर्शनाचार्यजी महाराज

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। भगवान श्रीकृष्ण की जीवन की हर बात कोई न कोई संदेश देने वाली है। सुख-दुःख जीवन का हिस्सा है लेकिन कुछ लोग आत्मज्ञान प्राप्त कर इससे उपर आनंद की स्थिति में पहुंच जाते है। आनंद से भी उपर की स्थिति परमानंद की होती है जो भगवान की शरण में जाने से ही प्राप्त होती है। हंसते हुए प्राकट्य होने वाले श्रीकृष्ण का नाम ही आनंद व उत्सव का प्रतीक है। भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से हर स्थिति में मुस्कराने की कला सीख सकते है। ये विचार शहर के देवरिया बालाजी रोड स्थित आरके आरसी माहेश्वरी भवन में काष्ट परिवार की ओर से आयोजित सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ महोत्सव के पांचवें दिन शुक्रवार को व्यास पीठ से कथा वाचन करते हुए अलवर से आए स्वामी सुदर्शनाचार्यजी महाराज ने व्यक्त किए। कथा के पांचवें दिन श्रीकृष्ण बाल लीला, गोवर्धन पूजा प्रसंग के वाचन के साथ छप्पन भोग की झांकी सजाई गई। महाराजश्री ने भगवान श्रीकृष्ण की बाललीला से जुड़े विभिन्न प्रसंगों का वाचन करते हुए कहा कि माता यशोदा ने गोविन्द के विराट एवं शिशु दोनों रूप देखे। नंद और यशोदा ने कन्हैया की बाल लीलाओं का आंदन किस तरह प्राप्त किया इसकी भी चर्चा की। उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के गोवर्धन पर्वत को धारण करने के प्रसंग का वाचन करते हुए कहा कि भगवान कृष्ण ने गिरिराज गोवर्धन महाराज की पूजा करने की प्रेरणा प्रदान करके देवराज इन्द्र के अभिमान को नष्ट किया। इन्द्र के प्रकोप से बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत को अंगुली पर उठाने के कारण भगवान को गिरिराज धरण का नाम भी दिया गया। इस प्रसंग के दौरान कथास्थल पर छप्पनभोग की झांकी भी सजाई गई। पांडाल गिरिराज धरण के जयकारों से गूंज उठा जब भगवान गिरिराज को छप्पन भोग लगाया गया। छप्पन भोग की सजाई गई झांकी के दर्शन करने के लिए भक्तगण आतुर रहे।

ग्रीष्मकालीन अभिरूचि शिविर का समापन

अनिल पाटनी. शाबाश इंडिया

अजमेर। महावीर इंटरनेशनल पद्मावती व राजस्थान ब्राह्मण महासभा अजमेर महिला जिला प्रकोष्ठ के द्वारा आयोजित ग्रीष्मकालीन अभिरूचि शिविर का समापन आज हंस पैराडाइज फॉयसागर रोड पर समापन हुआ। इस अवसर पर सर्वप्रथम भगवान गणेश जी के चित्र पर द्वीप प्रज्वलन व भगवान गणेश वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इसके बाद बच्चो ने डांस, योगा, कराटे मेहंदी कला का प्रदर्शन कर कार्यक्रम मे चार चांद लगा दिये। अध्यक्ष मीना शर्मा ने बताया कि 30 दिवसीय शिविर का समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि प्रशिक्षु आर पी एस आयुष वसिष्ठ, महावीर इंटरनेशनल अंतराष्ट्रीय सेक्रटरी जनरल अशोक गोयल व पदम चंद जैन, महिला सशक्तिकरण की को डायरेक्टर अलका दुधेड़ीया, महावीर इंटरनैशनल अजयमेरु संरक्षक कमल गंगवाल, सचिव विजय पांड्या,पद्मावती की सचिव निकिता पंचोली निक्की जैन, लायंस क्लब पृथ्वीराज के राजेन्द्र गांधी,पार्षद प्रतिभा पाराशर आदि उपस्थित रहे। शिविर संयोजिका मीना शर्मा ने बताया कि शिविर में करीब 50 बच्चों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में प्रथम, द्वितीय व तृतीय व समस्त शिवरार्थी बच्चों को पारितोषिक व प्रमाण पत्र दिए गए। इस अवसर पर आरपीएस आयुष वशिष्ट ने सम्बोधित करते हुए कहा कि इन बच्चों की प्रतिभा देखकर लगता है कि इनको बचपन से तराशा जाए तो इनके हुनर व प्रतिभा को देश का नाम रोशन कर सकते हैं। आज देश मे बाल मजदुरी बढ़ने पर चिंता व्यक्त की। महावीर इंटरनेशनल केंद्र के संरक्षक कमल गंगवाल ने अपने उदबोधन में समर केम्प के बारे मे जानकारी दी और केम्प में प्रशिक्षित हुए बच्चों को आह्वान करते हुऐ कहा की चैन बनाकर नन्हे-मुन्हे बच्चों को जोड़कर देश और समाज के विकास की भागीदारी में सहयोग करे और कहा कि देश मे प्रतिभा की कमी नहीं है, कमी है उनके हुनर को तराश कर उन्हें प्रोत्साहित कर आगे बढ़ाए जो कि ऐसे शिविर के माध्यम से ही सम्भव है। राजस्थान ब्राह्मण महासभा के पंडित सुदामा ने उद्बोधन में कहा की इन बच्चों को आगे बढ़ाने हेतु सदैव सहयोग करने को तैयार है तथा इनको एक धार्मिक यात्रा करवाने की भी घोषणा की । इस अवसर पर निक्की जैन ने समर कैंप पर प्रकाश डाला इसके लिये मीना शर्मा का आभार व्यक्त किया। राजीव शर्मा, रामावतार शर्मा, गिरधर गौड़, संजय शर्मा, घनश्याम जी ,जे. के. शर्मा, नरेश मुद्गल व ब्राह्मण समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति मौजूद रहे एवं समाज की मात्र शक्ति ने अद्भुत एकता दिखाई जिसमें सुलोचना, दमयंती, उषा, पिया, रिया, चित्रा, सुनीता, सुनीता शर्मा, विजयलक्ष्मी, बबीता, कुसूम मिश्रा राधिका, कामिनी जी,जय श्री, मंजू,सीमा जी, युक्ता, भविका,हर्षिता तनु और भी सम्मानित सदस्य मौजूद रहे।

श्री जिनदत्त सागर जी क्षुल्लक महाराज ने आकिंचन्य व्रत ग्रहण किया

शाबाश इंडिया। आचार्य गुरुवर श्री निर्भय सागर मुनिराज के आज्ञानुवर्ती शिष्य श्री जिनदत्त सागर जी क्षुल्लक महाराज, जिन्होंने दीक्षा के समय अपने परिग्रह का त्याग करके आकिंचन्य व्रत ग्रहण किया, अपने शरीर से वस्त्र आभूषणों को उतार कर फेंक दिया, केशों को क्लेश समान समझते हुए उनका भी लौंच कर डाला। अब देह से भी निर्ममत्व होकर नग्न रहने की आकांक्षा रखते हैं। विशेष सिद्धि और विशेष लोक सेवा के लिए ही विशेष तपश्चरण की जरूरत होती है। तपश्चरण ही रोम-रोम में रमे हुए आंतरिक मल को छांट कर आत्मा को शुद्ध ,साफ ,समर्थ और कार्यक्षम बनाता है ऐसे पूज्य क्षुल्लक जी महाराज की आहार चर्या निरन्तराय संपन्न हुई।

योग प्रशिक्षण शिविर का हुआ समापन

उदयपुर. शाबाश इंडिया। संगिनी जैन सोशल ग्रुप मेन उदयपुर द्वारा महिलाओं को योग के प्रति जागरूक करने और मानसिक प्रेशर कम करने के उद्देश्य से योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन शुभकेसर वाटिका में किया गया। ग्रुप अध्यक्ष जेएसजीएन डॉ प्रमिला जैन ने बताया कि आजकल हर महिला किसी न किसी मानसिक प्रेशर से गुजर रही हैं. किसी को बच्चों की चिंता होती है तो किसी को परिवार का तनाव रहता है. ये तनाव और चिंता ही महिलाओं को बीपी, शुगर और घुटने के दर्द सहित अन्य बीमारियों से जकड़ लेता है। ऐसे में योगे करने से तनाव कम होता है, मानसिक शक्ति बढ़ती है और बीमारियां दूर रहती हैं अतः हमें नियमित योग करना चाहिए। इस शिविर में योग साधक और प्रशिक्षक श्रीमती श्वेता चण्डालिया ने ग्रुप की संगिनी बहनों को योग साधना स्वास्थ्य लाभ स्वस्थ दैनिक दिनचर्या, आहार-विहार, रितु चर्या, स्वस्थ व्रत, जीवन में योग का महत्व उपयोगिता के बारे में जानकारी दी व साथ ही यौगिक क्रियाएं सिखाई और करवाई ।योग की विभिन्न क्रियाओं के साथ ही फेस योगा, म्यूजिक योगा, लाफ्टर थैरेपी भी करवाई गई ।उन्होंने नियमित रूप से योग करने के फायदे भी बताए ।उन्होंने बताया कि योग से आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ शारीरिक विकास होता है और योग ही स्वस्थ जीवन का आधार है। इस कार्यक्रम में डॉ प्रमिला जैन के साथ लक्ष्मी कोठारी,शशि जैन, कमला नलवाया,गुणबाला जैन,संजिता रानी कोठारी, अनिता चौधरी, नमिता मेहता, मंजू चौधरी, सरोज तलेसरा आदि कई सदस्य उपस्थित थे।

वेद ज्ञान

ईश्वर के द्वारा रचित सौंदर्यता

ईश्वर ने जब धरती रची, तो हर जगह उन्होंने सौंदर्य बिखेरा। उन्होंने हमें सौंदर्यबोध भी दिया, लेकिन यह बात हम पर छोड़ दी कि हम किसे देखें और किसे अनदेखा करें। इसके बाद हम अपने बनाए विधानों में ही रच-बस गए। यकीनन हमने सैर सपाटा किया, लेकिन बस छुट्टियां मनाने के भाव से। अपने आसपास बिखरे सौंदर्य को अनदेखा किया और खुद को कृत्रिम चीजों को देखने में ही व्यस्त कर डाला। आसपास कितना सौंदर्य है, इसका आभास तिनका-तिनका जोड़ रही एक चिड़िया को अपना घोंसला बनाते देखकर महसूस किया जा सकता है। मेघों को उमड़ते घुमड़ते देखना, उनके भिन्न-भिन्न आकारों-प्रकारों को बनते-बिगड़ते देखना सहज रोमांचित कर सकता है। अंग्रेजी भाषा के कवि इमर्सन कहते थे कि हम सारी दुनिया घूमते हैं और खुबसूरती तलाशते रहते हैं, कभी मुड़कर भी नहीं देखते, अपने पास ही छुपी हुई खूबसूरती की ओर। दरअसल हमारे पास सौंदर्यबोध होकर भी नहीं होता। वह दबा-दबा सा रहता है। काम की आपाधापी ने तो उसे और दबा दिया है। जो प्रकृति प्रेमी हैं, जानते हैं कि दुनिया की हर वस्तु में अप्रतिम सौंदर्य का वास है। बस देखने का नजरिया चाहिए। दार्शनिक खलील जिब्रान कहते हैं कि खूबसूरती यूं ही प्रत्यक्ष नहीं होती, यह दिल की रोशनी है, बहुत ध्यान से देखनी पड़ती है। ध्यान से देखना तभी संभव होता है, जब आप निर्मल हों। आप जितने निष्कपट होंगे सौंदर्य उतना ही अधिक आपके पास होगा। फिर नीरस से नीरस चीजों में भी आप सौंदर्य तलाश लेंगे। महान गणितज्ञ और दार्शनिक पाइथागोरस ने गणित और खूबसूरती में भी संबंध तलाश लिया था। उन्होंने पते की बात कही थी कि किसी भी वस्तु का अगर गणितीय आयाम सटीक है, तो वह खूबसूरत है। प्राचीन यूनानी स्थापत्य पाइथागोरस के इसी सौंदर्य सिद्धांत को ध्यान में रखकर तैयार किया गया था, लेकिन ये बातें बाहरी सुंदरता पर फोकस करती हैं। वस्तुतः सुंदरता एकता में विविधता और विविधता में एकता का नाम है। वैविध्य के तमाम घटकों के बीच सह अस्तित्व की धारणा का होना ही सौंदर्य है। यह बोध ही हमें प्रकृतिप्रेमी और मानवता का पुजारी बनाता है और यही भावना वसुधैव कुटंबकम की अवधारणा के मूल में है।

संपादकीय

अब भारतीय ज्ञान परंपरा को सहेजने पर बल

हमारे यहां शिक्षा का स्वरूप काफी कुछ रोजगार आधारित बन गया है। यही मैकाले की शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य था। सरकार और व्यवस्था के काम लायक लोगों को तैयार करना। वही शिक्षा पद्धति आजादी के बाद भी बनी रही। बल्कि शिक्षा को रोजगारोन्मुखी बनाने पर जोर और बढ़ गया। इसमें कोई बुराई नहीं। जिस शिक्षा से आजीविका का प्रबंध न हो सके, उस पर प्रश्नचिह्न स्वाभाविक है। मगर हकीकत यह है कि रोजगार के बहुत सारे अवसर तकनीकी ज्ञान पर आधारित होते गए हैं। इस तरह पाठ्यक्रमों में उसी प्रकार के पाठ शामिल किए जाते हैं, जो आगे चल कर विभिन्न अवसरों पर विद्यार्थियों के काम आ सकें। फिर, जिस तरह शिक्षा को लेकर पूरी दुनिया में प्रयोग हो रहे हैं, उसमें कौशल विकास के नाम पर ज्यादातर औद्योगिक जरूरतों को ध्यान में रखा जाता है। खासकर उच्च शिक्षा में उन्हीं पाठ्यक्रमों में अधिक भीड़ देखी जाती है, जिन्हें पढ़ कर विद्यार्थियों को ऊंचे वेतन वाली नौकरी पाने की संभावना अधिक रहती है। इस तरह धीरे-धीरे पारंपरिक भारतीय ज्ञान परंपरा लगभग लुप्त होने को है। अच्छी बात है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उस ज्ञान परंपरा को सहेजने की पहल की है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यानी यूजीसी ने देश के सभी विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों को निर्देश जारी किया है कि वे अपने पाठ्यक्रमों में भारतीय पारंपरिक ज्ञान को समाहित करने का प्रयास करें। खासकर स्नातक स्तर पर ऐसे पाठ जरूर शामिल किए जाएं। संभव है, कुछ लोगों को यह निर्देश नागवार गुजर सकता है, मगर इस जरूरत से इंकार नहीं किया जा सकता कि आज जिस तरह ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में परस्पर आवाजाही बढ़ी है और पुरानी सभ्यता और संस्कृतियों से बहुत कुछ लेने का प्रयास किया जा रहा है, उसमें भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रमों में समाहित करने से परहेज क्यों होना चाहिए। चिकित्सा, खगोल विज्ञान, स्थापत्य, रसायन विज्ञान आदि क्षेत्रों में भारत की ज्ञान परंपरा आज भी दुनिया के लिए आकर्षण का विषय है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजंसी अगर प्राचीन भारतीय खगोल विज्ञान की स्थापनाओं के आधार पर अंतरिक्ष के रहस्यों को सुलझाने का प्रयास कर रहा है, तो हमें उसे पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने से क्यों गुरेज होना चाहिए। अगर योग विज्ञान को दुनिया भर के चिकित्सा विज्ञान ने एक कारगर पद्धति मान लिया है, तो उससे जुड़े पाठ हमें क्यों नहीं पढ़ने चाहिए। स्थापत्य, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन, दस्तकारी, कृषि, पशुपालन, बागवानी आदि के विभिन्न क्षेत्रों में ऐसी अनेक प्राचीन ज्ञान परंपराएं बिखरी पड़ी हैं, जो रोजगार की दृष्टि से भी उपयोगी हो सकती हैं। सबसे बड़ी बात कि इससे समाज और जीवन के आधारभूत तत्त्व मजबूत होंगे। जीवन और समाज में इसलिए बहुत सारी विसंगतियां पैदा हो गई हैं कि हमने अपने परिवेश से अलग सभ्यता और संस्कृति को अपनाने और उसके मुताबिक जीने का प्रयास किया है। इससे पर्यावरण को भी बहुत नुकसान पहुंचा है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

आधुनिकता!

आधुनिकता के नाम पर युवाओं ने जीवन को अपने ढंग से जीने की आजादी लगभग हासिल कर ली है। लगता है, शिक्षित समाज का एक बड़ा हिस्सा इसे उनका अधिकार मान कर स्वीकार भी कर चुका है। रूढ़ियों को ढोते रहना प्रगतिशील समाज की निशानी भी नहीं होती। मगर दिक्कत तब होती है, जब समाज की मूल बनावट और उसके मिजाज को रूढ़ि करार देकर ध्वस्त करने का प्रयास किया जाता है। जीवन जीने की आजादी का अर्थ बहुत सारे युवाओं ने स्वच्छंद जीना समझ लिया है। इसी का नतीजा है कि अपनी पसंद के किसी साथी के साथ बिना विवाह के रहना एक आम प्रवृत्ति बनती जा रही है। शुरू में इस प्रवृत्ति का पुरजोर विरोध हुआ, मगर कुछ लोगों ने इसके पक्ष में आवाजें उठानी शुरू कर दीं, सहजीवन को निजता के अधिकार से जोड़ कर देखा जाने लगा, तब यह प्रवृत्ति अपनी जड़ें जमाती गई। अब इसके अनेक नकारात्मक प्रभाव नजर आने लगे हैं। सहजीवन में रह रहे जोड़ों के हिंसक व्यवहार की अनेक घटनाएं सामने आ चुकी हैं। मगर इस प्रवृत्ति में कोई बदलाव नजर नहीं आ रहा। केरल उच्च न्यायालय ने ऐसे ही एक मामले में कहा कि सहजीवन को किसी भी वैवाहिक कानून के तहत मान्यता प्राप्त नहीं है। दरअसल, केरल में बिना विवाह के साथ रह रहे एक जोड़े ने अदालत में तलाक की अर्जी लगाई थी। बिना विवाह किए साथ रहने में यह तो आजादी है कि दोनों में अगर किसी तरह का मतभेद होता है और वे अलग होना चाहते हैं, तो हो सकते हैं। इसी आजादी के चलते बहुत सारे युवा सहजीवन में रहने का फैसला करते हैं। मगर दिक्कत तब शुरू होती है, जब वैवाहिक संबंधों को ध्यान में रखते हुए बने कानूनों के उपयोग की बारी आती है। सहजीवन में रह रही लड़कियां घरेलू हिंसा के मामले में किसी तरह की कानूनी सहायता नहीं प्राप्त कर पातीं। ऐसे जोड़ों का प्रायः अपने परिवार से संबंध विच्छेद हो चुका होता है, इसलिए वहां से भी उन्हें कोई मदद नहीं मिल पाती। विवाह के बाद एक लड़की को जो कानूनी सुरक्षा और अधिकार मिल जाते हैं, वह सहजीवन में रहते हुए नहीं मिल सकते। इस तरह वह न तो किसी भी रूप में अपने भरण-पोषण का दावा कर सकती है और न अपने साथी की संपत्ति में हिस्सा मांग सकती है। अगर सहजीवन में रहते हुए उन्हें किसी संतान की उत्पत्ति होती है, तो उसका अधिकार भी बाधित रहता है। हर समाज की अपनी अलग संरचना होती है। भारतीय समाज में किसी भी स्त्री-पुरुष को बिना विवाह के साथ रहने की इजाजत नहीं है। यहां स्त्री-पुरुष का साथ केवल जिस्मानी नहीं, कई स्तरों पर जुड़ा होता है। फिर भी पश्चिमी प्रभावों में कुछ युवा अपनी आजादी का तर्क देते हुए बिना विवाह के साथ रहना शुरू कर देते हैं। उन्हें लगता है कि विवाह एक प्रकार की सामाजिक झंझट है, इससे व्यक्ति की स्वतंत्रता खत्म हो जाती है। मगर वे शायद भूल जाते हैं कि उनकी मानसिक बुनियाद इसी समाज में तैयार हुई है और इसी सामाजिक वातावरण में उन्हें रहना पड़ता है, इसलिए शादी न करने के बावजूद उनके सामने भी वही दुश्वारियां, वही संघर्ष पेश आते हैं, जो सामान्य वैवाहिक जीवन में आती हैं। इस तरह बेशक वे समाज में अलग-थलग पड़ जाते हैं। जब तक इस संबंध में कोई कानून नहीं बन जाता, जो कि खासे विवाद का विषय है, सहजीवन की दुश्वारियां समाप्त नहीं होंगी।

चातुर्मास 2023 मंगल प्रवेश पत्रिका का हुआ विमोचन

जयपुर. शाबाश इंडिया

ऐतिहासिक धर्म नगरी जयपुर के आमेर स्थित संकटहरण पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर फागीवाला में होने जा रहे पूज्य उपाध्याय श्री 108 ऊर्जयंत सागर जी मुनिराज के 2023 चातुर्मास के मंगल प्रवेश की पत्रिका का विमोचन श्री तारा चंद जी मनीष जी स्विटकेट्स के निवास पांच बत्ती जयपुर पर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के अध्यक्ष श्री सुधांशु कासलीवाल के कर कमलों से संपन्न हुआ। स्वीट केटर्स पर आयोजित धर्म सभा को चातुर्मास मंगल प्रवेश पत्रिका के विमोचन के उपरांत पंडित सुरेंद्र जी सलुंबर, पंडित सनत

कुमार जी, श्री महावीर जी तीर्थ क्षेत्र समिति के मंत्री श्री महेंद्र जी पाटनी ने संबोधित किया। चातुर्मास समिति के मुख्य संयोजक रूपेंद्र छाबड़ा अशोक के अनुसार इस अवसर पर समाज श्रेष्ठि देव कुमार खंडाका, राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाष पांड्या, समाज श्रेष्ठि ज्ञान चंद झाझरी, मोहित राणा, श्री महावीर स्कूल समिति के अध्यक्ष उमरावमल संघी, मंत्री सुनील बक्सी, वरिष्ट पत्रकार प्रवीण चंद छाबड़ा, मनीष वैद, समाज सेवक सुखानंद काला, पदम बिलाला, दौलत फागीवाला, योगेश टोडरका, विनोद जैन कोटखावदा, शिखर गोधा सारसोप, निर्मल जैन धुवां, महेश सेठी, बाबू लाल ईटून्दा सहित शहर के सभी संगठनों के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अंबाबाड़ी जैन मंदिर का त्रिदिवसीय श्री मज्जिनेन्द्र वेदीप्रतिष्ठा महोत्सव आज से

जयपुर. शाबाश इंडिया

परम पूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से श्री दिगम्बर जैन मंदिर अंबाबाड़ी का त्रिदिवसीय श्री मज्जिनेन्द्र वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव शनिवार सुबह 6 बजे से विभिन्न धार्मिक आयोजनों के साथ शुरू होगा। 19 जून तक चलने वाले इस वार्षिकोत्सव के दारान भक्तामर अनुष्ठान, घटयात्रा हवन सहित अनेक धार्मिक आयोजन होंगे। मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष टीकम चंद सेठी व मंत्री सुरेश कुमार ठोलिया ने बताया कि वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रथम दिन शनिवार को सुबह 6 बजे से इन्द्र प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा के बाद के बाद सुबह 6.30 बजे अभिषेक व शांतिधारा के बाद ध्वजारोहण समाजश्रेष्ठी राकेश कुमार-प्रतीक कुमार जैन ध्वजारोहण करेंगे। इसी दिन दोपहर में 12.30 बजे श्री पंच परमेष्ठी विधान व साम को 7.30 बजे साजों के बी 48 दीपकों से संगीतमय भक्तामर अनुष्ठान होगा। मंदिर के संस्थापक प्रेमचंद बड़जात्या ने बताया कि महोत्सव के दूसरे दिन 18 जून को सुबह 6 बजे अभिषेक व शांतिधारा के बाद घटयाटा जुलूस निकलेगा। इसके बाद सुबह 9 बजे वेदी शुद्धि की जाएगी। इसीदिन दोपहर 1बजे याग मंडल विधान पूजा के बाद साम को 7.30 बजे आरती के बाद भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि महोत्सव के अंतिम दिन 19 जून को सुबह 6.30 बजे अभिषेक व शांतिधारा के बाद सुबह 7.30 बजे हवन के बाद श्रीजी को वेदी में विराजमान किया जाएगा। इसी दिन साम को 7.30 बजे महाआरती व आनंद यात्रा का आयोजन होगा। महोत्सव में मुख्य कलष स्थापनाकर्ता मोहनी देवी व शांति देवी ठोलिया परिवार होंगे जबकि सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य अखिलेष-रजनी सेठी को परिवार को प्राप्त हुआ। महोत्सव की संपूर्ण क्रियाएं प्रतिष्ठाचार्य डॉ.सनत कुमार जैन सम्पन्न कराएंगे।

नि :शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर आज से

जयपुर. शाबाश इंडिया

सेवाधर्म मिशन, जयपुर के तत्वावधान में व जिला अन्धता निवारण समिति जयपुर के सहयोग से विशाल 153वां नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर एवं लेन्स प्रत्यारोपण शिविर शनिवार को सुबह 10 बजे से अचलेश्वर महादेव मंदिर, रामनगर शॉपिंग सेन्टर, राम कृष्ण धाम, जयपुर में आयोजित किया जाएगा। शिविर 20 जून तक चलेगा। यह जानकारी देते हुए शिविर के संयोजक ताराचन्द जैन ने बताया कि इस शिविर का प्रारंभ 17 जून को प्रातः 10 बजे किया जाएगा। शिविर में मोतियाबिन्द, कालापानी, काला मोतिया, परवल नाखूना का उपचार होगा। आउटडोर अचलेश्वर महादेव मंदिर, रामनगर शॉपिंग सेन्टर, राम कृष्ण धाम होंगें। प्रेस सचिव ओमप्रकाश तरदिया ने बताया कि शिविर में आवास की व्यवस्था अचलेश्वर महादेव मंदिर, रामनगर शॉपिंग सेन्टर, राम कृष्ण धाम, जयपुर में व आउटडोर की दर्वाइ या आनन्द मार्ग यूनिवर्सल रिलीफ टीम जयपुर के सौजन्य से नि:शुल्क रहेगी। शिविर में 17 जून को प्रातः 10.00 बजे से 2.00 बजे तक आंखों की जांच व भर्ती का आउटडोर होगा। 18 जून को आंखों का ऑपरेशन अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ डॉ. एमएम बंसल, डॉ. अर्पणा शर्मा, डॉ. रितुअग्रवाल व उनकी टीम करेंगी। आउटडोर की दर्वाइ यां आनन्द मार्ग, यूनिवर्सल रिलीफ टीम की ओर से दी जाएगी। शिविर में मरीज भर्ती मरीज अपना मूल व फॉटो कॉपी आधार कार्ड/चुनाव परिचय पत्र/राशन कार्ड व फोटो साथ लाना आवश्यक है।

श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर जगतपुरा का दो दिवसीय वार्षिकोत्सव आज से

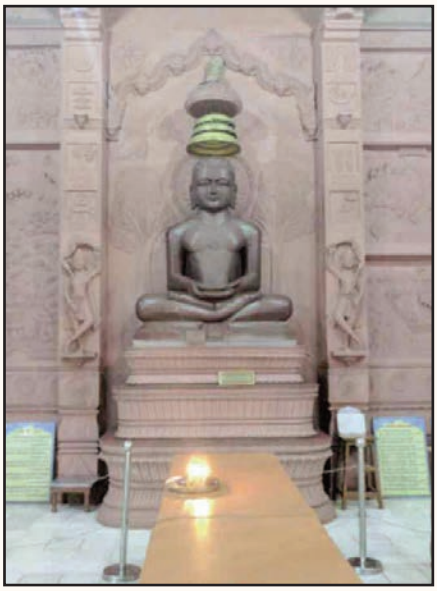

जयपुर. शाबाश इंडिया। जगतपुरा मैन मार्केट स्थित अतिशय कारी प्राचीन व श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर का दो दिवसीय वार्षिक महोत्सव शनिवार को सुबह 7 बजे से विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के साथ शुरू होगा। इस दौरान श्रीजी की शांतिधारा,पूजा व भक्तामर अनुष्ठान सहित कई धार्मिक आयोजन होंगे। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक विनोद पापड़ीवाल व राकेश पाटनी ने बताया कि वाषिकोत्सव के प्रथम दिन शनिवार को सुबह 7 बजे श्री जी का स्वर्ण कलश से 108 कलशाभिषेक होगा। इसीदिन साम को साम 7 बजे जगतपुरा व जयपुर जैन समाज के श्रावक श्राविकाओं की ओर से रिद्धि सिद्धि मंत्रों से 48 दीपकों से संगीतमय श्री भक्तामर दीप अनुष्ठान व 108 दीपकों से संगीतमय महाआरती की जाएगी। इस अवसर पर राजेश-वर्षा बाकलीवाल, डॉ.अविनाश-सरिता जैन चित्र अनावरण व दीप प्रज्ज्वलित कर दो दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ करेंगे। इस मौके पर संगीत जगत के प्रख्यात राष्ट्रीय संगीतकार नरेन्द्र जैन व सुभाष बज अपने बेहतरीन गायन श्री भक्तामर स्तोत्र की अनुठी प्रस्तुति देंगे। उन्होंने बताया कि महोत्सव के दूसरे दिन 18 जून को सुबह 7.15 बजे झंडारोहण के बाद मंदिर जी श्री की शोभायात्रा एवं घटयात्रा निकाली जाएगी,जो प्रमुख बाजार से होती हुई कार्यक्रम स्थल पहुंचेगी जहां ध्वजारोहण होने के पश्चात पं. विमल जैन बनेठा के नेतृत्व में श्री शांतिनाथ मण्डल का संगीतमय विधान होगा। विशाल आयोजन में सरस डेयरी सीकर झुंझुनूं के मेनेजिंग डायरेक्टर डॉ. राजीव जैन मुख्य अतिथि एवं प्रमुख समाजसेवी सुरेश सोनी माणक-रमेश ठोलिया, मनोज सौगानी, विनय सौगानी, मनोज झांझरी उपस्थित होंगे। इस मौके पर उपस्थित सभी उपस्थित धार्मिक बंधुओ का दुपट्टा पहनाकर स्वागत सम्मान किया जाएगा।

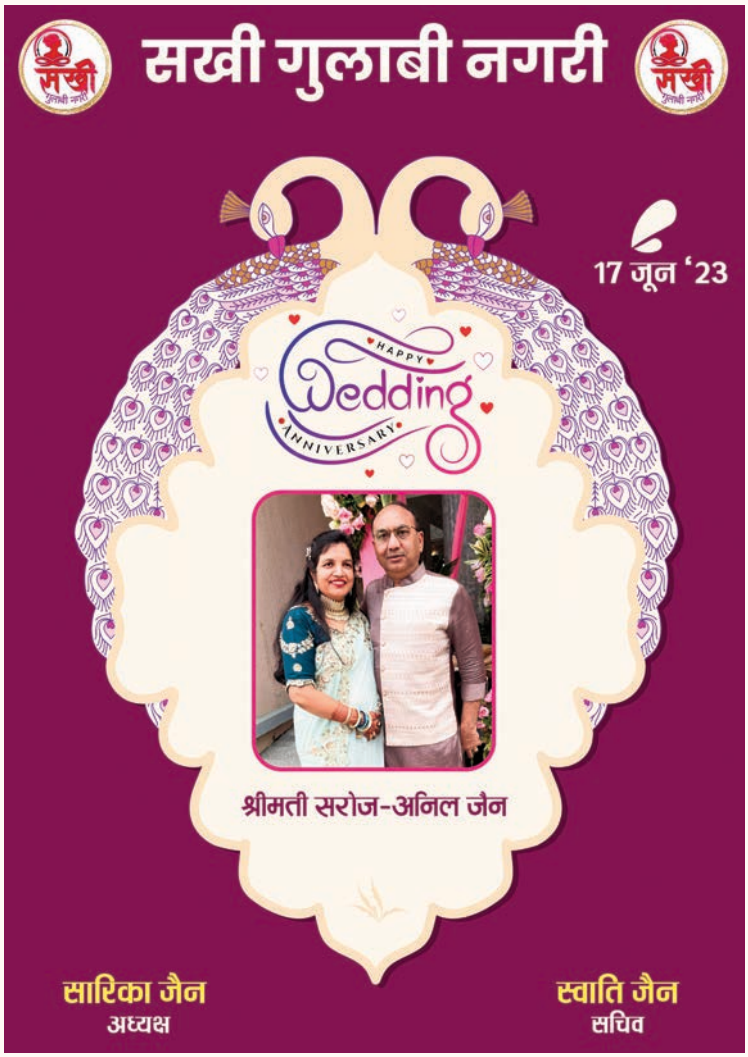

जीवित पशु वस्तु नहीं है उनका निर्यात क्यों?

संसद में प्रस्तुत किए जाने वाले पशुधन आयात निर्यात विधेयक 2023 का विरोध। जिन्दा पशु निर्यात पर आपत्ति दर्ज करें नही तो पशुओं को मारने के दोषी हम भी: मुनि सुधासगार

ललितपुर. शाबाश इंडिया

अहिंसा धर्म को मानने वाले भारत देश में अब जीवित पशुओं को भी वस्तु मानकर उन्हें निर्यात किए जाने के लिए संसद में पशुधन आयात निर्यात विधेयक 2023 को प्रस्तुत कर उसे पारित किए जाने की तैयारी केंद्र सरकार कर रही है।

इस संबंध में भारत सरकार के मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय द्वारा विधेयक का मसौदा तैयार किया गया है, जिसे संसद के इसी सत्र में प्रस्तुत किया जाना प्रस्तावित है। इस विधेयक को लाने का मुख्य उद्देश्य अभी तक भारत से किए जा रहे मांस निर्यात के साथ-साथ अब जीवित पशुओं का भी निर्यात किया जा सके ताकि उनका वध किया जाकर मांस का उत्पादन बढ़ाया जा सके और दुनिया में मांस की मांग अनुसार आपूर्ति होकर मांसाहार को बढ़ावा मिले। झांसी में विराजमान मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने सभी से आह्वान किया है की जिन्दा पशु निर्यात पर आपत्ति दर्ज करें नही तो पशुओं को मारने के दोषी हम भी हैं। पशुपालन एवं डेयरी, विभाग भारत सरकार के पत्र दिनांक 7 जून 23 के अनुसार जिंदा पशुओं को भारत से निर्यात करने लिये एक नए विधेयक लाने की साजिश की जा रही है (पत्र की प्रति संलग्न)। सरकार को स्मरण रखना चाहिए कि जिंदा मूक पशु कोई पंसारी की दुकान पर मिलने वाली कमोडिटी (वस्तु) नहीं है, जिसका निर्यात किया जा सके? सरकार आज जीवित पशुओं को वस्तु मानकर उनका निर्यात करना चाहती है तो क्या कल जीवित इंसानों को भी कमोडिटी (वस्तु) मानकर उनका भी निर्यात करेगी? तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड के मंत्री डॉ सुनील जैन संचय ने प्रस्तावित विधेयक का विरोध करते हुए विधेयक को अहिंसा और शाकाहार में विश्वास रखने वाली समाज की भावनाओं को आहत और जीवित मूक पशुओं पर अत्याचार करने वाला बताते हुए विधेयक को संसद में प्रस्तुत न किए जाने की मांग की है।

भगवान के नाम जपने पर इंसान जन्म मरण के चक्रव्यू से मुक्ति पा सकता है प्रवर्तक सुकन महाराज

सुनिल चपलोत. शाबाश इंडिया।

उदयपुर। परमात्मा का नाम लेने से व्यक्ति अपना जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। प्रवर्तक सुकन मुनि महाराज ने शुक्रवार को साईफन चौराहा साधना अपार्टमेंट मे धर्म संदेश देतें हुये कहा की संसार मे कौई तिरा सकता है तो वह प्रभु का नाम है जिससे नियमित स्मरण करोगे तभी आत्मा का कल्याण हो पाएगा वरना यह आत्मा संसार मे ऐसे ही भटकती रहेगी। भगवान का नाम ही मनुष्य को जन्म मरण के चक्रव्यूह से मुक्ति दिला पाएगा। युवाप्रणेता महेश मुनि, बालयोगी अखिलेश मुनि इसदौरान महामंत्र नवकार जाप करवाया। तारा गुरू ग्रंथालय के मंत्री रमेश खोखावत ने जानकारी देते हुये बताया कि देवेन्द्र धाम से साईमन चौराहा पर संतो के पधारने पर सुरेश मोदी संदीप बोलिया,लोकेश कोठारी,जितेंद्र चपलोत,विजेन्द्र कोठारी,अनिल परमार,पवन महता,जीवन सिंह सराफ आदि सभी ने विहार तथा सामूहिक जाप मे उपस्थित थे। शनिवार को प्रातः 8 बजे प्रवर्तक सुकन मुनि उपप्रवर्तक अमृत मुनि महेशमुनि आदि सभी संत भव्य जूलूस के साथ तारा गुरू ग्रंथालय पधारेंगे वहा आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करेंगे। तथा रविवार को हिरण मंगरी सेक्टर 4 महावीर भवन मे प्रवचन प्रदान करेंगे।

शुद्ध देशी घी के नाम पर हम क्या खरीद रहे हैं?

चाहे खाना हो या पूजन के लिए यदि आप घी बजार से खरीद रहे हैं तो सौ फीसद आप मिलावटी घी खरीद रहे हैं।

शाबाश इंडिया

गाँव में भी आजकल की महिलाओं के पास समय कम ही है। वे दूध से दही बना लेंगी किन्तु घी के लिए कौन मथनी करे, कौन रोज मक्खन एकत्र करे, कौन एक दिन तीक्ष्ण गंध मक्खन को गर्म कर घी निकाले? इतना माथापच्ची करने भर का समय है? नही। जब भी जरूरत पड़े तो घरेलू सामान की खरीद सूची में घी भी लिख दें। आसान है। जब गाँव आलसी हो जाता है तो शहर मिलावट खरीदने पर मजबूर होता है। शहर में सभी घी का प्रयोग करते हैं लेकिन कोई विकल्प न होने के कारण मजबूर हैं। इसका लाभ ठग बखूबी उठाते हैं। घी के नाम पर चमकीले डब्बों में मिलावट बेंच दिया जाता है। देशी घी के नाम पर बिकने वाले उत्पाद में यकीनन दो नम्बरी है। कुछ उत्पाद शुद्ध भी होंगे पर इसके लिए जाँच करना आवश्यक है। जिसे कोई भी बड़े आराम से कर सकता है। शुद्ध देशी घी के बनाने की विधि से सभी परिचित हैं। नकली घी कैसे बनता है जानते हैं- शुद्ध घी की कमी और बढ़ती माँग की पूर्ति के लिए घी में वनस्पति तैल का प्रचूर मात्रा में प्रयोग होता रहा है। अब जबकि घी मँहगा और वनस्पति तैल भी दाम में कम नही तो मुनाफे को दोगुना की दृष्टि से इसमें बड़े तौर पर आलू का प्रयोग किया जा रहा है। यदि आप आलू उबालकर उसे मैस करें तो कमोबेस घी का रंग ही मिलता है। अब सोचिए बारह-पंद्रह सौ किलो के घी में पचास फीसद साठ-सत्तर किलो वाला आलू व वनस्पति तैल का मिश्रण डाल दिया जाए तो? घोटालेबाजों को मालूम है कि किस मिकदार में क्या-क्या मिश्रण प्रयुक्त हो कि देख-चख कर अन्दाजा लगाना मुश्किल हो। कुछ तो पूजन आदि के लिए प्रयोग किए जाने वाले घी में घी होता ही नही है। मात्र वनस्पति तैल व आलू का मिश्रण ही रहता है जिसमें केमिकल एसेंस की मदद से घी की खुश्बू चढ़ा दी जाती है।

डॉ पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेदाचार्य
चिकित्साधिकारी राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान विधानसभा,जयपुर।
9828011871

पता कैसे करें...

मान लीजिए आपके पास घर का बना घी और बाजारू घी उपलब्ध है। उसे दो अलग-अलग प्लेट में लें। अब चूँकि आलू में स्टार्च होता है जो आयोडीन के कुछ बूँदों के मिलने पर रिएक्ट करता है। पर्पल (जामुनी) रंग छोड़ देता है। आयोडीन की कुछ बूँदें डालकर जाँचें। यदि आयोडीन न मिले तो किसी मेडिकल स्टोर से पॉयोडीन मलहम लेकर इस्तेमाल करें। इसमें भी आयोडीन होता है। पॉयोडीन डालने पर शुद्ध घी के रंग में सिर्फ पॉयोडीन का ब्राउन रंग ही दिखेगा। जबकि नकली घी एकदम स्याह हो जाएगा।

नेहानगर सागर में आयुष जैन एवं सचिन जैन का भव्य स्वागत

डिप्टी कलेक्टर एवं डिप्टी कमिश्नर सहकारिता में चयनित होने पर बधाई

मनीष विद्यार्थी. शाबाश इंडिया।

सागर। भारतीय प्रशासनिक परीक्षा में चयनित हुए आयुष जैन जो मड़देरा जिला छतरपुर के निवासी हैं, वर्तमान में नेहा नगर सागर में निवासरत है आपके पिता बीज निगम बिजावर में पदस्थ है, मां कुशल ग्रहणी है, छोटी बहन कृषि उपज मंडी में उपनिरीक्षक के पद पर पदस्थ है एवं बनगांव दमोह से डिप्टी कमिश्नर सहकारिता के पद पर मध्यप्रदेश में दसवीं रैंक पर चयनित सचिन जैन ने दमोह कॉलेज से फिजिक्स में गोल्ड मेडल प्राप्त किया है। पिता ऋषभ जैन गल्ला व्यापारी एवं माता श्रीमती प्रतिभा जैन कुशल ग्रहणी है छोटा भाई अध्यनरत है दोनों से छात्र ग्राम पंचायत से आते हैं । श्री दिगंबर जैन मंदिर समिति नेहानगर सागर द्वारा मकरोनिया चौराहे से बैंड बाजे के साथ भव्य स्वागत किया गया ।मकरोनिया चौराहे से जैन मंदिर तक सभी ने तिलक माला द्वारा घर के द्वारे पर स्वागत किया एवं बधाई दी। मंदिर जी में अभिषेक शांतिधारा के बाद दोनों का समाज की ओर से सम्मान समारोह का कार्यक्रम रखा गया जिसमें मंगलाचरण रूपचंद जैन मड़देवरा ने किया। मंदिर समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष नीलेश जैन भूसा , महामंत्री अशोक जैन मड़देवरा, संतोष चैन घड़ी, मनोज बगेला, डॉ अभय जैन, सुमित प्रकाश जैन, राहुल जैन आयुष के पापा भागचंद जैन ने कहा कि आज मेरे बेटे के साथ नेहानगर समाज ने मेरा मान रखा इस पर सभी का आभार माना बालक के विषय में अपनी पत्नी श्रीमती आशा जैन को श्रेय दिया।

जेस फरीदाबाद की प्रेरक पहल, निबंध प्रतियोगिता में 30 हजार रुपए के पुरुस्कार

फरीदाबाद. शाबाश इंडिया

जैन इंजिनियरस सोसाइटी व वर्धमान महावीर सेवा सोसाइटी फरीदाबाद ने समाज में अपने सामाजिक, पारिवारिक दायित्वों का बोध बढ़ाकर संयुक्त, नेह भरे परिवारों की स्थापना की पहल के लिए एक भारतवर्षीय निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया है। संस्था के संरक्षक व वरिष्ठ डॉ, इंजिनियर सुभाष जैन ने बताया, निबंध प्रतियोगिता का बिषय ''दूर भागती हुयी युवा पीढ़ी परिवार, संस्कार, समाज, धर्म व परोपकार से कैसे जुड़े'', आज छोटे नगर युवा विहीन हो रहे हैं, बूढ़े माँ बाप अकेले रहने को अभिशप्त हैं। संयुक्त परिवार की धारणा बिखर चुकी है। पहिले महानगर व वहाँ से विदेश ही बच्चों के लक्ष्य हैं, युवा पीढ़ी परिवार, समाज, संस्कार, धर्म व सेवा से दूर हो हो रही है. यह प्रवत्ति समाज के भविष्य के लिये घातक व खतरे का संकेत है। इसी के समाधान में सहयोग के लिए जेस फरीदाबाद इकाई व वर्धमान महावीर सेवा सोसाइटी ने एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया है। पुरुस्कार में रुपए 11000/-, 5000/-, 2100/- व 1100/- के 11 पुरस्कार दिए जायेंगे व अच्छे, प्रेरक निबंधों की एक पुस्तक समाज कोउपलब्ध करायी जायेगी।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com